VOL- X | ISSUE- X | OCTOBER | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

उत्तर प्रदेश के जौनपुर जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरूप का बदलता स्वरूप (वर्ष १९९८–२०१८)

विकास सिंह,
शोधार्थी
डा. बी. आर. पन्त,
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
भूगोल विभाग, एम. बी. जी. पी. जी. कालेज, हल्द्वानी, नैनीताल

सारांश

भूमि उपयोग एव उसक महत्व मानवीय आव यकताओं के अनुसार बदलते रहते है। जिसमें भूमि का बदलता स्वरूप कोई नवीन घटना नही है बल्कि एक स्थानिक भूमि स्थानान्तरण प्रक्रिया है, जो स्थान एवं काल के संदर्भ में सतत् घटित होती रहती है, जो मानवीय समुदाय के आर्थिक स्त्रोतों एवं व्यवसायिक क्रियाओं में परिवर्तन से प्रभावित होती है। प्रस्तुत भाोधपत्र विगत दो द ाकों (१९९८–२०१८) मे भूमि उपयोग परिवर्तन एवं उसका कृशि भूमि पर प्रभाव वि ोशतः भौतिक परिवे ा, सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था जैसी स्थानीय घटनाएॅ वन, भाुद्ध बोयी भूमि, कृशि योग्य बेकार भमि, परती भूमि, ऊसर भूमि एवं कृशि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि के प्रतिरूप निरन्तर प्रभावित हुये है। क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि का कृशि भूमि पर दबाव, सिंचाई के साधनों की उचित व्यवस्था एवं वितरण, परम्परागत एवं उन्नत ील कृशि यन्त्रों का उपयोग एवं कृशि विधि में परिवर्तन कर खाद्य आपूर्ति जैसे चुनौतियों से निपटने आदि पर केन्द्रित है।

सांकेतिक शब्द : भूमि उपयोग, भाुद्ध बोयी भूमि, कृशि योग्य बेकार भूमि, स्थायी एवं अस्थायी परती भूमि, ऊसर भूमि एवं सुधार, कृशि भूमि पर दबाव।

प्रस्तावना

भूमि संसाधन धरातल पर मनुष्य द्वारा किये गये सभी विकास कार्यों को अपने में समाहित किये हुए है। भूमि पर मानव द्वारा विभिन्न क्रियाकलाप सम्पादित किये जाते है। सम्प्रति भूमि उपयोग भौगोलिक अध्ययन में एक महत्वपूर्ण परिवर्तनशील पक्ष है क्योंकि प्रारम्भिक काल से लेकर वर्तमान समय तक कृषि मानव प्राविधिकी विकास क्रम के अनुसार परिवर्तनशील रही है। वर्तमान स्वरूप में नगरीय विकास एवं केन्द्र स्थलों के उद्भव के कारण इसके परिवर्तनशील प्रतिरूप का विश्लेषण प्रादेशिक नियोजन एवं विकास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भौगोलिक अध्ययन में भूमि प्रयोग, भूमि उपयोग तथा भूमि संसाधन उपयोग विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होते है।

फॉक्स के अनुसार भूमि प्रयोग के अन्तर्गत कोई भू–भाग प्रकृति–प्रदत्त विशेषताओं के अनुसार रहता है। प्राथमिक अवस्था में भू–भाग वानस्पतिक आवरण से आच्छादित या वनस्पति विहीन रहता है। इस प्रकार यदि कोई भू–भाग मानवीय प्रभावों से वंचित है, अथवा उसका उपयोग प्राकृतिक रूप से हो रहा है, तो उस भू–भाग के लिए भू प्रयोग शब्द समीचीन होगा। यदि किसी भू–भाग पर मानवीय प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा है, या मानव अपनी आवश्यकता के अनुसार भूमि का प्रयोग कर रहा हो, तब उस भू–भाग के लिए भूमि का उपयोग

शब्द का प्रयोग अधिक समीचीन होगा। इस प्रकार मानवीय उपयोग के साथ ही भूमि संसाधन इकाई बन जाती है। भूमि उपयोग, भूमि प्रयोग की ही शोषण प्रक्रिया है, जिसमें भूमि का व्यावहारिक उपयोग निश्चित उद्देश्य से सम्पन्न किया जाता है।

विभिन्न विद्वानों द्वारा भूमि प्रयोग एवं भूमि उपयोग शब्दों की उपयुक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि भूमि प्रयोग एवं भूमि उपयोग शब्दावलियों के अर्थ में पर्याप्त अन्तर है। दोनों शब्द कालक्रमानुसार कृषि विकास प्रक्रिया की दो भिन्न–भिन्न अवस्थाओं से सम्बन्धित है। मानवीय प्रभाव से रहित भूमि प्रयोग की अवस्था प्राकृतिक विशेषताओं से पूर्ण रहती है, लेकिन जब मानव अपनी आवश्यकता पूर्ति हेतु इसका प्रयोग करने लगता है तथा मानवीय प्राविधिकी के विकास–क्रमानुसार इस भूमि उपयोग का स्वरूप परिवर्तित होने लगता है, तो उसके लिए भूमि उपयोग शब्द का प्रयोग करना अधिक समीचीन होगा।

भूमि संसाधन उपयोग शब्द का प्रयोग प्रायः भू–अर्थशास्त्रियों ने किया है, जिससे भूमि संसाधन इकाई का उपयोग आदर्शतम् उपयोगिता सिद्धान्तों के अनुरूप किया जाता है। मानव प्रभावों से रहित या अविकसित क्षेत्र उपयोगिता की दृष्टि से महत्वहीन है। फलतः सांस्कृतिक भूगोल के क्षेत्र में भूमि उपयोग एक क्रियाशील अवधारणा है, जब किसी भी क्षेत्र के भूमि का उपयोग उस क्षेत्र की आर्थिक समस्याओं के अनुसार सम्पन्न होता है। तब भूमि का उपयोग स्वच्छन्द रूप से नहीं होता है। अतएव ऐसे भूमि का प्रयोग अधिक उचित होगा।

वारलोब (1954) में भूमि संसाधन उपयोग के औचित्यपूर्ण प्रयोग का समर्थन करते हुए इसको भूमि समस्या एवं नियोजन सम्बन्धी विवेचना का महत्वपूर्ण अंग माना है। साथ ही उन्होंने भूमि संसाधन उपयोग के विभिन्न पक्षों की ओर इंगित करते हुए कहा है कि भू–आकृतिक दृष्टिकोण से भूमि उपयोग का प्राथमिक सम्बन्ध उसकी स्थिति, अवस्था, परिवर्तन एवं सामंजस्य से है, जिसका प्रादुर्भाव भूमि संसाधनों के उपयोग से होता है। किसी क्षेत्र में भूमि उपयोग ऐतिहासिक घटनाओं का गुणात्मक परिणाम होता है। यह प्राकृतिक पर्यावरण के साथ आर्थिक शक्तियों की अन्योन्यक्रिया और सामाजिक मूल्यों का परिणाम होता है। भौगोलिक क्षेत्र के उपयोग के मौलिक वितरण पर प्राकृतिक पर्यावरण के महत्वपूर्ण प्रभाव के बाद भी सांस्कृतिक पारिस्थितिकी के अनुरूप भूमि उपयोग का सामंजस्य भी पाया जाता है (जसवीर सिंह 1974)। इससे यह प्रमाणित होता है कि भूमि उपयोग और पर्यावरण के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन महत्वपूर्ण हैं। इसके लिए क्षेत्रीय अध्ययन और भूमि उपयोग सर्वेक्षण आवश्यक होता है।

पन्त (1988, 1991, 1994), पन्त एवं अन्य (1988, 1991,) भूमि का उपयोग भूमि की किस्म के अनुसार किया जाता है उत्तम किस्म की भूमि में खेती की गहनता अधिकता होती है, जबकि निम्न श्रेणी की भूमि में उत्पादकता कम होने के कारण गहनता कम होती है।

20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दौर में जब जनसंख्या का भूमि पर बहुत कम दबाव था एवं कृषि हेतु विपुल भूमि उपलब्ध थी व्यवसाय बहुत ही परम्परागत हुआ करते थे उस समय विशिष्ट क्षेत्र पर कृषि होती थी तदुपरान्त उसे कुछ समय के पश्चात छोड़कर दूसरी नयी भूमि साफ करके कृषि की जाती थी क्योंकि नयी भूमि में उत्पादकता अधिक होती थी परन्तु वर्तमान समय में जनसंख्या के बढ़ते जनभार के कारण भूमि संसाधन का सर्वत्र अभाव हो गया है। भूमि

का उपयोग विविध कार्यों में किया जा रहा है। कृषि प्रधान क्षेत्रों में मानवीय क्रियाकलापों एवं भूख के निवारण हेतु इसका अधिकांश भाग आदर्श भूमि उपयोग के विपरीत प्रयोग में लाया जा रहा है जो एक चिन्ता का विषय बन गया है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र जनपद जौनपुर का विस्तार 25°22' उत्तरी अक्षांश से 26°12' उत्तरी तथा 82°7' पूर्वी देशान्तर से 83°5' पूर्वी देशान्तर के मध्य है। लगभग समान आकृति में फैले इस जनपद की लम्बाई उत्तर से दक्षिण 85 किमी. तथा चौड़ाई पश्चिम से पूर्व 90 किमी. है। जौनपुर जनपद का धरातल समुद्रतल से 79. 55–88.39 मी. ऊंचा है। जनपद का क्षेत्रफल 4038 वर्ग किमी. है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से 6 तहसीलों एवं 21 विकासखण्डों में विभक्त है।

अध्ययन क्षेत्र के उद्देश्य

प्रस्तुत अनुसंधान प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में विगत् 20 वर्ष में (1998–2018) विकासखण्डवार भूमि उपयोग परिवर्तन एवं उसका कृषि भूमि पर प्रभाव का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करना है तथा उन पर भौतिक एवं मानवीय तत्वों के प्रभावों को उद्घृत करना है जो भूमि परिवर्तन के विशिष्ट विशेषताओं के लिए उत्तरदायी है।

ऑकडों का संग्रह तवं विधितंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीय ऑकडों पर आधारित है। ऑकडों का संकलन सांख्यिकी पत्रिका, भू–लेख विभाग, आर्थिक संचालन विभाग और संख्यिकीय विभाग द्वारा प्रकाशित एवं अप्रकाशित स्त्रोत तथा पूर्व मे किये गये अनुसंधान से प्राप्त किये गये है। प्रस्तुत शोध पत्र में सर्वप्रथम समस्याओं की पहचान कर साहित्यिक पुनरावलोकन किया गया। संगृहित आकडों का सारणीयन एवं विश्लेषण किया गया है तथा जी. आई. एस. की सहायता से उचित ग्राफ एवं मानचित्रों के माध्यम से आकडों को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है।

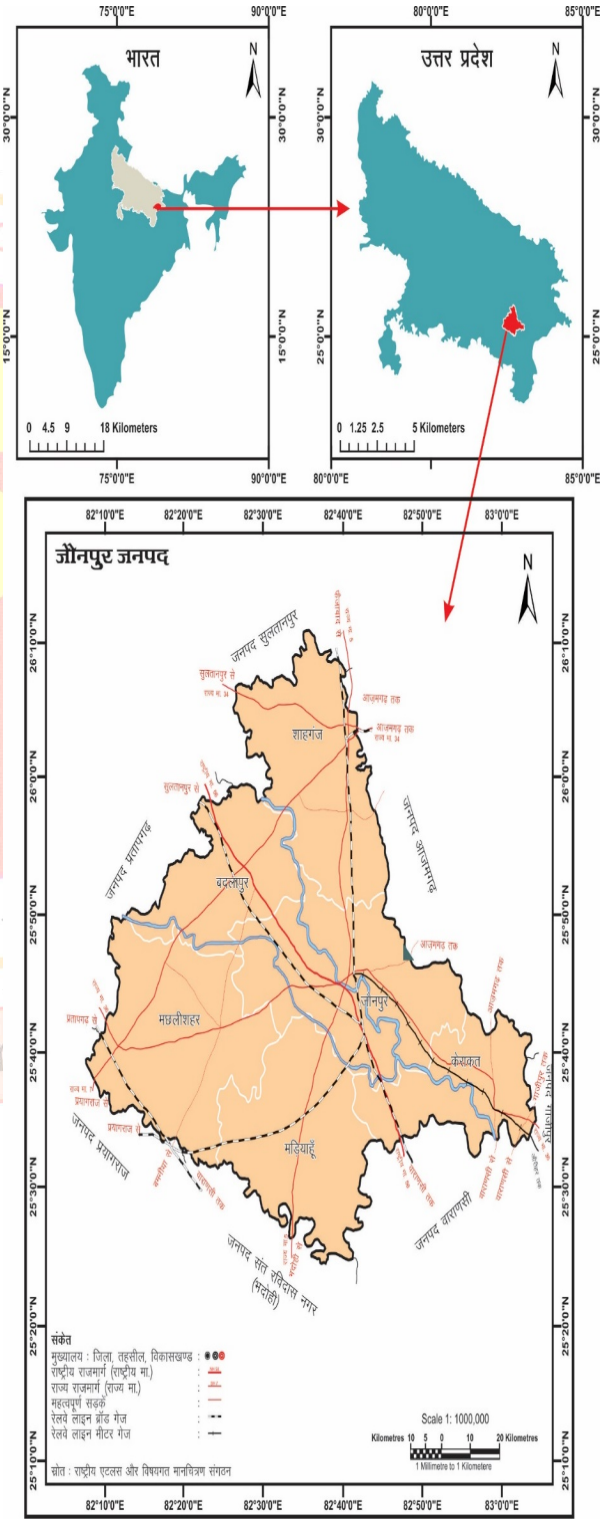

तालिका–१ जौनपुर जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरूप (1998–2018)

भूमि उपयोग की श्रेणी	१९९८		२०१८		१९९८–२०१८	
	प्रतिवेदित क्षेत्र (हेक्टे. में)	क्षेत्रफल (प्रतिशत में)	प्रतिवेदित क्षेत्र (हेक्टे. में)	क्षेत्रफल (प्रतिशत में)	परिवर्तन (हेक्टे. में)	परिवर्तन (प्रतिशत में)
वन भूमि	६३	०.०२	४२९	०.११	३६६	.०.०९
गैर–कृषि भूमि	४३३५२	१०.९२	४९६०१	१२.५०	६२४९	.१.५८
बंजर भूमि	७११३	१.७९	६८२९	१.७२	.२८४	.०.०७
चारागह भूमि	१५०२	०.३८	१४३१	०.३६	.७१	.०.०२
अन्य वृक्ष, झाड़ियों आदि का क्षेत्रफल	५३४३	१.३५	२८२४	०.७१	.२५१९	.०.६३
कृषि अयोग्य भूमि	८२०२	२.०७	९९९५	२.५२	.१७९३	.०.४५
अन्य परती भूमि	१७२९८	४.३६	२४८२२	६.२५	७५२४	.१.९०
वर्तमान परती भूमि	२३८२८	६.००	२५०८०	६.३२	१२५२	.०.३२
शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	२९०२८४	७३.१२	२७५८७१	६९.५१	.१४४१३	.३.६१
कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	३९६९८५	१००	३९६८८२	१००	१०३	.०.०३

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पत्रिका, वर्ष 1998 एवं 2018

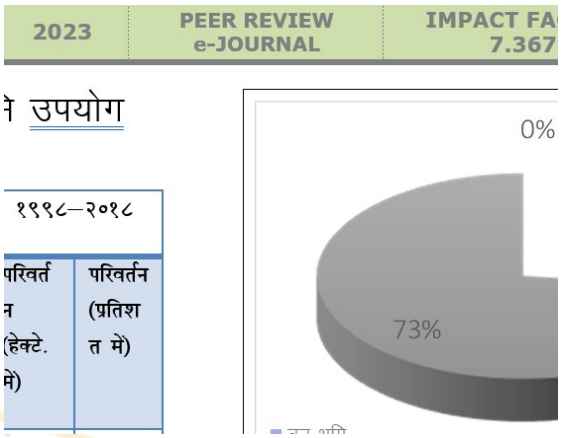

ग्राफ–1: जौनपुर जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष–1998)

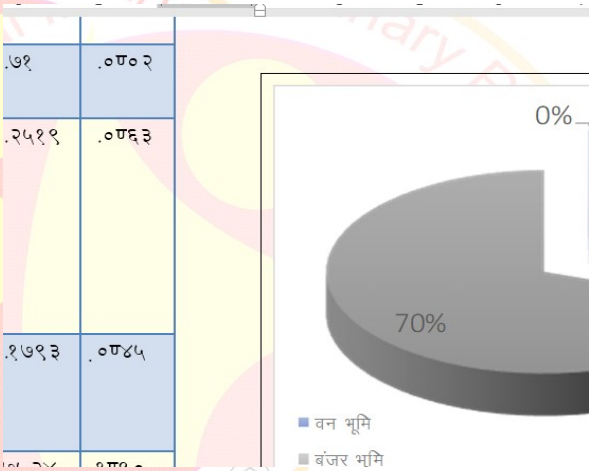

ग्राफ–2: जौनपुर जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष–2018)

VOL- X | ISSUE- X | OCTOBER | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

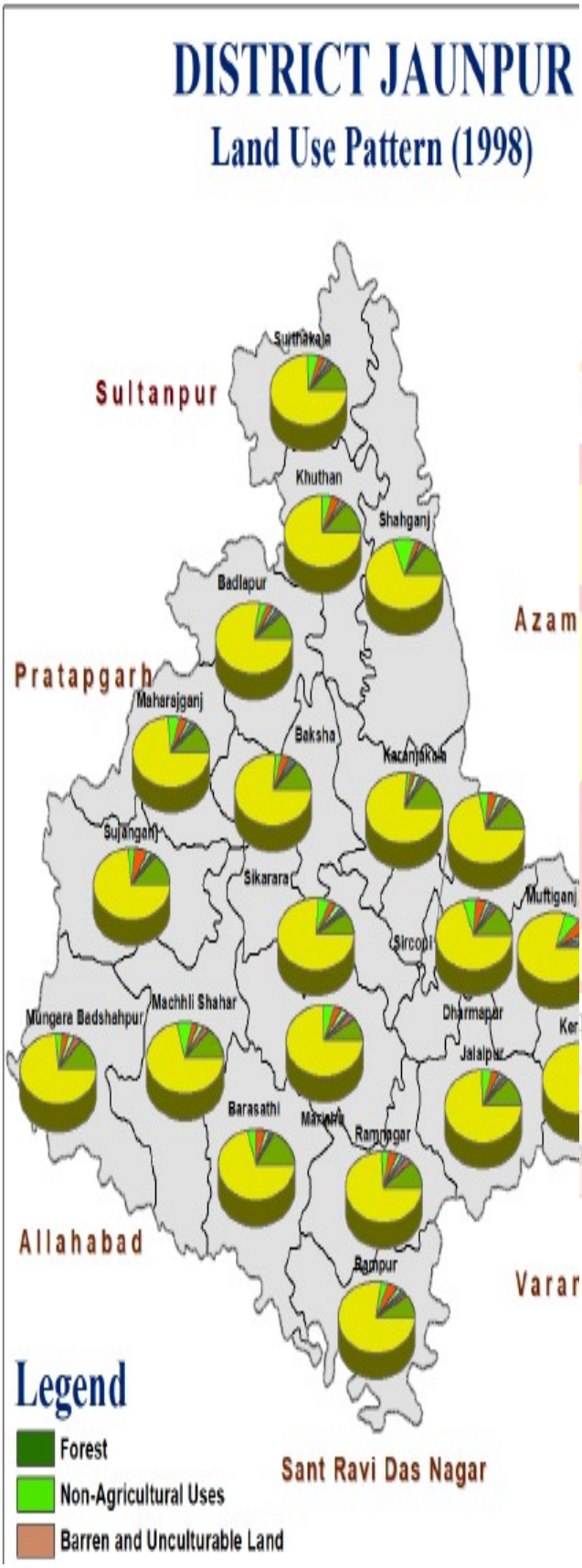

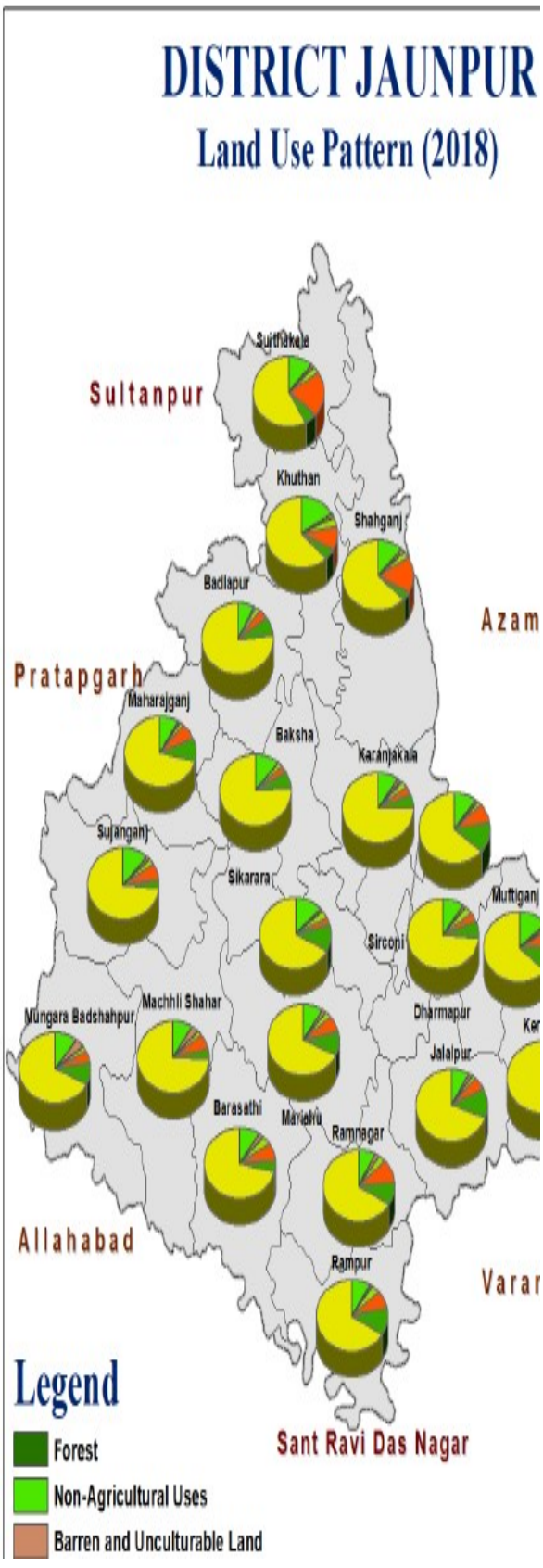

तालिका–२: जौनपुर जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरूप का विकासखण्डवार क्षेत्र वितरण (वर्ष–1998)

विकासखण्ड	वन भूमि (%)	गैर–कृषि भूमि (%)	बंजर भूमि (%)	चारागाह भूमि (%)	अन्य वृक्ष, झाड़ियों आदि का क्षेत्रफल (%)	कृषि अयोग्य भूमि (%)	अन्य परती भूमि (%)	वर्तमान परती भूमि (%)	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल (%)
सुइथाकला	0.07	10.66	1.65	0.59	1.22	1.76	3.65	6.35	74.08
शाहगंज	0	12.66	1.45	0.63	0.88	1.32	2.84	12.47	67.76
खुटहन	0.03	11.81	1.57	0.67	1.39	1.62	4.18	5.82	72.92
करंजाकला	0	12.57	1.87	0.79	1.16	2.67	2.43	2.12	76.38
बदलापुर	0	9.38	1.22	0.17	1.92	1.74	3.34	4.08	78.16
महाराजगंज	0	10.07	1.41	0.28	1.67	1.92	4.45	7.29	72.9
बक्सा	0.04	11.54	1.06	0.11	1.53	1.23	4.38	3.85	76.27
सुजानगंज	0	11.46	1.36	0.31	1.07	2.04	7.47	3.79	72.5
मुंगरा बादशाहपुर	0	12.42	3.2	0.27	0.88	3.02	3.8	3.92	72.49
मछलीशहर	0.03	11.55	2.74	0.4	0.58	2.68	3.5	8.87	69.65
मड़ियाहूं	0	8.18	2.82	0.32	1.04	2.95	3.98	6.66	74.04
बरसठी	0.05	14.42	1.25	0.44	1.35	2.32	5.66	5.5	69
सिकरारा	0.03	8.24	1.27	0.3	1.39	2.36	3.66	6.59	76.17
धरमापुर	0	11.61	1.87	0.09	2.27	2.06	5.94	7.32	68.84
रामनगर	0	9.45	2.62	0.19	2.14	2.5	5.06	4.29	73.75
रामपुर	0.04	7.79	1.45	0.38	1.51	2	5.17	4.25	77.45
मुफ्तीगंज	0.03	10.57	1.7	0.52	1.85	1.97	4.85	6.79	71.72
जलालपुर	0	10.98	1.76	0.17	1.35	1.56	3.99	6.31	73.88
केराकत	0	10.34	1.4	0.27	1.59	1.3	4.7	5.94	74.47
डोभी	0	9.96	1.47	0.41	1.43	1.41	5.03	4.5	75.8
सिरकोनी	0	11.86	2.01	0.29	1.78	2.59	5.43	5.15	70.88
कुल योग	0.02	10.92	1.79	0.38	1.79	2.07	4.36	6.00	73.12

VOL- X | ISSUE- X | OCTOBER | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

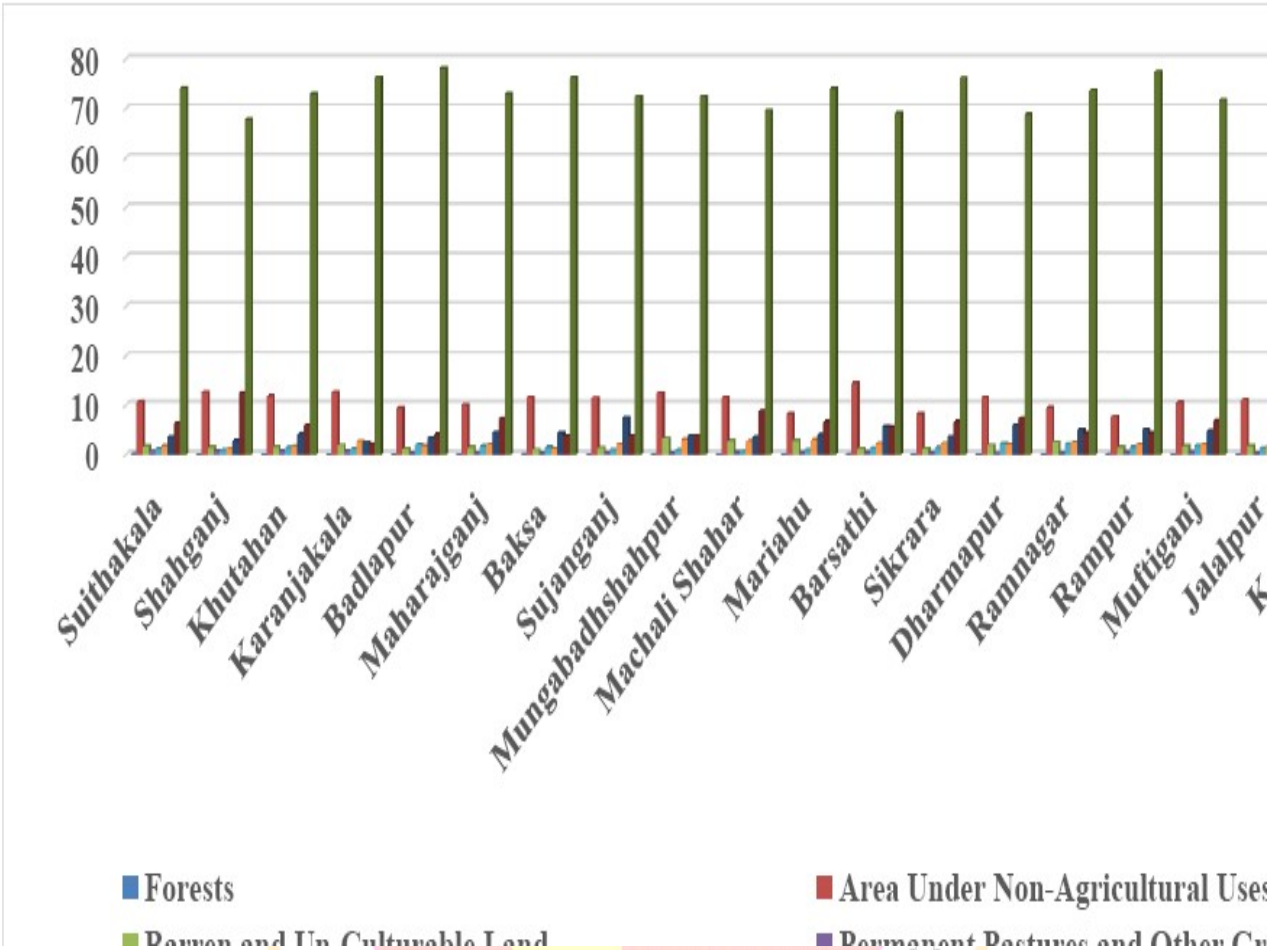

ग्राफ–३: जौनपुर जनपद में भूमि उपयोग प्रतिशत का विकासखण्डवार क्षेत्र वितरण (वर्ष–१९९८)

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com

तालिका–३: जौनपुर जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरूप का विकासखण्डवार क्षेत्र वितरण (वर्ष–2018)

विकासखण्ड	वन भूमि (%)	गैर–कृषि भूमि (%)	बंजर भूमि (%)	चारागाह भूमि (%)	अन्य वृक्ष, झाड़ियों आदि का क्षेत्रफल (%)	कृषि अयोग्य भूमि (%)	अन्य परती भूमि (%)	वर्तमान परती भूमि (%)	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल (%)
सुइथाकला	0.10	13.60	1.33	0.48	0.78	3.03	15.33	5.70	59.65
शाहगंज	0.02	14.19	1.62	0.68	0.19	2.49	12.44	2.98	65.39
खुटहन	0.02	18.03	1.25	0.54	0.92	3.40	7.48	4.35	64.01
करंजाकला	0.00	12.13	1.52	0.73	1.10	2.44	3.05	4.46	74.58
बदलापुर	0.00	9.68	0.99	0.17	1.07	2.21	4.39	5.93	75.56
महाराजगंज	0.06	10.95	1.17	0.23	0.84	1.81	6.41	7.43	71.10
बक्सा	0.03	13.47	0.74	0.05	0.91	2.11	2.83	5.28	74.58
सुजानगंज	0.05	14.02	1.35	0.30	0.69	2.31	5.60	2.54	73.14
मुंगरा बादशाहपुर	0.00	13.00	3.74	0.63	0.62	1.85	4.23	6.95	68.98
मछलीशहर	0.05	11.41	3.38	0.54	0.47	2.03	5.36	3.11	73.65
मड़ियाहूं	0.02	11.75	1.91	0.42	0.68	2.76	5.66	7.41	69.39
बरसठी	0.37	11.83	2.41	0.21	0.47	3.74	6.12	3.34	71.51
सिकरारा	0.08	14.90	1.25	0.21	0.95	3.05	2.47	8.54	68.55
धरमापुर	0.12	12.38	1.05	0.04	0.56	3.65	3.29	5.43	73.48
रामनगर	0.06	9.99	2.37	0.21	0.78	3.38	8.15	7.27	67.79
रामपुर	0.19	11.04	1.32	0.24	0.49	3.42	6.71	8.88	67.71
मुफ्तीगंज	0.45	15.85	1.41	0.67	0.51	1.25	5.54	9.48	64.84
जलालपुर	0.09	10.51	1.84	0.11	0.82	1.92	5.06	9.42	70.23
केराकत	0.08	11.16	1.21	0.20	0.72	2.37	2.87	9.50	71.89
डोभी	0.05	9.40	1.48	0.45	0.86	1.72	6.06	9.68	70.30
सिरकोनी	0.64	12.73	1.25	0.00	0.89	1.98	6.35	10.84	65.32
कुल योग	0.11	12.50	1.72	0.36	0.71	2.52	6.25	6.32	69.51

स्रोत : जिला सांख्यिकी पत्रिका, जौनपुर जनपद, 2018

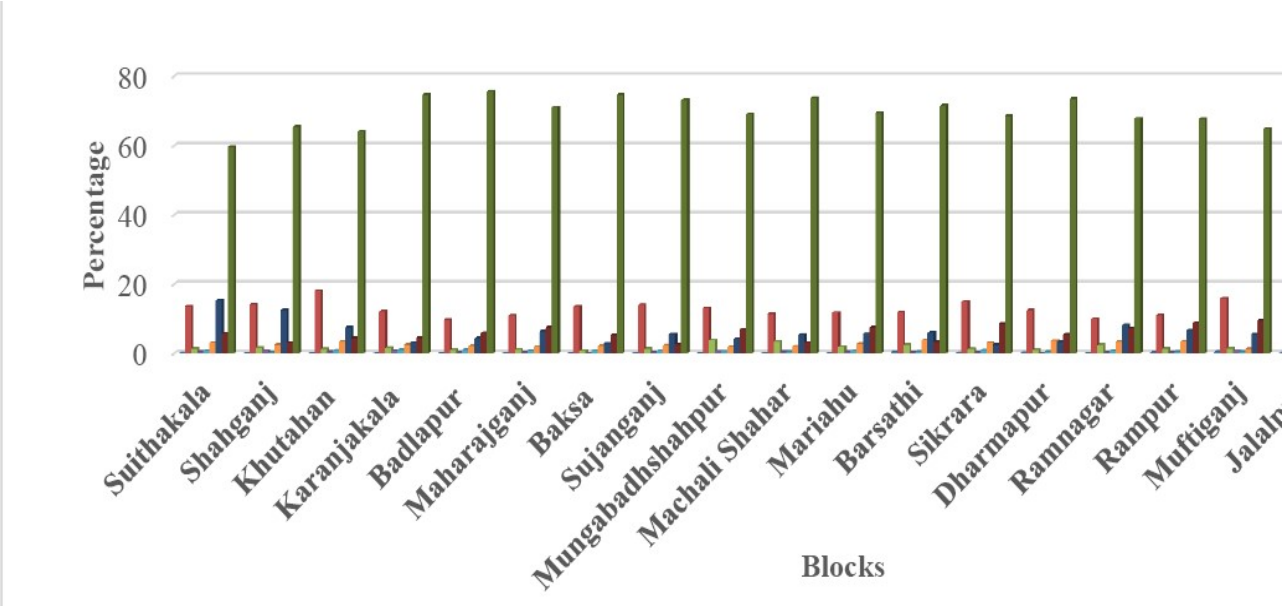

ग्राफ–4: जौनपुर जनपद में भूमि उपयोग प्रतिशत का विकासखण्डवार क्षेत्र वितरण (वर्ष–2018)

वन भूमि– तालिका 2, 3, ग्राफ 3, 4 तथा मानचित्र 2, 3 से स्पष्ट होता है कि वर्ष 1998 में जनपद जौनपुर में सर्वाधिक वन भूमि का क्षेत्रफल सुइथाकला (0.07 %), बरसठी (0. 05 %), बक्सा (0.04 %) एवं रामपुर (0.4 %) विकासखण्ड में पाये जाते थे जबकि अन्य विकासखण्डों में वन भूमि की क्षेत्रफल प्राप्त नहीं होते थे। इसी प्रकार वर्ष 2018 में अध्ययन क्षेत्र में वन भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल सिरकोनी (0. 64 %), मुफ्तीगंज (0.45 %), बरसठी (0. 37 %), विकासखण्ड में जबकि करंजाकला, बदलापुर, मु0 बादशाहपुर, विकासखण्ड में वनभूमि का क्षेत्रफल नहीं प्राप्त होता है।

गैर कृषि भूमि– तालिका 2, 3, ग्राफ 3, 4 तथा मानचित्र 2, 3 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में गैर कृषि भूमि के अन्तर्गत वर्ष 1998 में सर्वाधिक क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड खुटहन (18.03 %), मुफ्तीगंज (15. 85 %), सिकरारा (14.90 %) एवं सुजानगंज (14.02 %) जबकि सबसे कम क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्डों में डोभी (9.40 %), बदलापुर (9.68%), रामनगर (9.99%) पाये जाते हैं। इसी प्रकार वर्ष 1998 में सर्वाधिक क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड बरसठी (14.42%), शाहगंज (12.66%), करंजाकला (12.57%) पाये जाते थे जबकि सबसे कम क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड रामपुर (7.79%), मड़ियाहूँ (8.18%), तथा सिकरारा (8. 14%) पाये जाते थे।

बंजर भूमि– तालिका 2, 3, ग्राफ 3, 4 तथा मानचित्र 2, 3 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में बंजर भूमि के क्षेत्रफल में भी परिवर्तन हुआ है। वर्ष 1998 में अध्ययन में बंजर भूमि के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड मु0 बादशाहपुर (3.2%), मड़ियाहूँ (2.82%), मछलीशहर (2.74%) पाये जाते थे जबकि सबसे कम क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड बक्सा (1.06%), बदलापुर (1. 22%), बरसठी (1.25%) पाये जाते थे। इसी प्रकार वर्ष 2018 में अध्ययन क्षेत्र में बंजर भूमि

के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड मु0 बादशाहपुर (3.74%), मछलीशहर (3.38%) एवं बरसठी (2.41%) है जबकि सबसे कम क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड बक्सा (0.74%), बदलापुर (0. 99%) एवं धर्मापुर (1.04%) है।

चारागाह भूमि– तालिका 2, 3, ग्राफ 3, 4 तथा मानचित्र 2, 3 से स्पष्ट होता है कि वर्ष 1998 में जनपद जौनपुर में सर्वाधिक चारागाह क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड करंजाकला (0.79%), खुटहन (0.67%) एवं मुफ्तीगंज (0.52%) थे जबकि सबसे कम क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड धर्मापुर (0.09), बक्सा (0.11%) एवं बदलापुर (0.17%) थे। इसी प्रकार तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2018 में अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक चारागाह क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड करंजाकला (0.73%), शाहगंज (0.68%) एवं मुफ्तीगंज (0.67%) है। जबकि सबसे कम क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड सिरकोनी (0.00%), धर्मापुर (0.04%) एवं बक्सा (0.05%) है।

अन्य वृक्ष एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल– तालिका 2, 3, ग्राफ 3, 4 तथा मानचित्र 2, 3 से स्पष्ट होता है कि जनपद जौनपुर में अन्य वृक्ष एवं झाड़ियों के अन्तर्गत वर्ष 2018 में सर्वाधिक क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड करंजाकला (1.10%), बदलापुर (1.07%) एवं सिकरारा (0.95%) जबकि सबसे कम क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड शाहगंज (0. 19%), मछलीशहर (0.47%) एवं बरसठी (0. 47%) है। इसी प्रकार वर्ष 1998 में अन्य वृक्ष एवं झाड़ियों के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड धर्मापुर (2.27%), रामनगर (2.14%) एवं बदलापुर (1.92%) थे जबकि सबसे कम क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्डों में मछलीशहर (0.58%), शाहगंज (0.88) एवं मुंगरा बादशाहपुर (0.88%) थे।

कृषि अयोग्य भूमि– तालिका 2, 3, ग्राफ 3, 4 तथा मानचित्र 2, 3 से स्पष्ट होता है कि वर्ष 1998 में अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक कृषि अयोग्य भूमि धारण करने वाले विकासखण्डों में मु0 बादशाहपुर (3.02%), मड़ियाहूँ (2.95%), मछलीशहर (2.68%) थे जबकि सबसे कम क्षेत्रफल धारण वाले विकासखण्ड बक्सा (1. 23%), केराकत (1.30%) एवं शाहंगज (1. 32%) थे। इसी प्रकार वर्ष 2018 में सर्वाधिक कृषि अयोग्य भूमि धारण करने वाले विकासखण्ड बरसठी (3.74%), धर्मापुर (3.65%) एवं रामपुर (3.42%) है। जबकि सबसे कम क्षेत्रफल प्राप्त करने वाले विकासखण्ड मुफ्तीगंज (1.25%), डोभी (1.72%) एवं महाराजगंज (1. 81%) है।

अन्य परती भूमि– तालिका 2, 3, ग्राफ 3, 4 तथा मानचित्र 2, 3 से स्पष्ट होता है कि वष 1998 में जनपद में सर्वाधिक अन्य परती भूमि धारण करने वाले विकासखण्ड सुजानगंज (7. 47%), धर्मापुर (5.94%) एवं बरसठी (5.66%) थे जबकि सबसे कम क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड करंजाकला (2.43%), शाहगंज (2. 84%) एवं बदलापुर (3.34%) थे। इसी वर्ष 2018 में जनपद में अन्य परती भूमि के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड सुइथाकला (15.33%), शाहगंज (12.44%) एवं रामनगर (8.15%) है। जबकि सबसे कम क्षेत्रफल विकासखण्ड सिकरारा (2.

47%), बक्सा (2.83%), एवं केराकत (2.87%) में प्राप्त होता है।

वर्तमान परती भूमि– तालिका 2, 3, ग्राफ 3, 4 तथा मानचित्र 2, 3 से स्पष्ट होता वर्ष 1998 में अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान परती भूमि के अन्तर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड शाहगंज (12.47%), मछलीशहर (8.87%) एवं धर्मापुर (7.32%) में था। जबकि सबसे कम क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड करंजाकला (2.42%), सुजानगंज (3.79%) एवं बक्सा (3.85%) था। इसी प्रकार वर्ष 2018 में अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान परती भूमि की सर्वाधिक क्षेत्रफल प्राप्त करने वाले विकासखण्ड सिरकोनी (10.84%), डोभी (9. 68%) एवं केराकत (9.50%) है जबकि सबसे कम क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड सुजानगंज (2.54%), शाहगंज (2.98%) एवं मछलीशहर (3.11%) है।

शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल– तालिका 2, 3, ग्राफ 3, 4 तथा मानचित्र 2, 3 से स्पष्ट होता है कि वर्ष 1998 में जौनपुर जनपद में सर्वाधिक शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल विकासखण्ड बदलापुर (78. 16%), रामपुर (77.45%) एवं करंजाकला (76. 34%) में थे जबकि सबसे कम क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड शाहगंज (67.76%), धर्मापुर (68.84%) एवं बरसठी (69%) में था। इसी प्रकार तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2018 में अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल बदलापुर (75.56%), करंजाकला (74.58%), बक्सा (74.58%), में थे। जबकि जनपद में सबसे कम क्षेत्रफल धारण करने वाले विकासखण्ड सुइथाकला (59.65%), खुटहन (64.01%), शाहगंज (65.39%) में है।

निष्कर्ष

जनपद जौनपुर का वर्तमान अध्ययन विगत् दो द''ाकों (1998–2018) के मध्य विकासखण्ड वार भूमि उपयोग परिवर्तन का कृशि भूमि उपयोगिता पर पडने वाले प्रभाव के सन्दर्भ में परीक्षण एवं मूल्यांकन किया गया हैं। क्षेत्र में भूमि उपयोग के बदलाव, जनसंख्या दबााव के सन्दर्भ मे परिलक्षित हुये है, इसके अतिरिक्त लोगो की सामाजिक, आर्थिक स्थिति, मानसूनी वर्शा के प्रभाव, सिंचाई व्यवस्था एवं अनेको सहकारी नितियों का भूमि उपयोग के परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। क्षेत्र में जनवृद्धि के कारण भाुद्ध बोयी कृशि क्षेत्र में 3. 61 प्रति''ात की कमी तथा परती भूमि, कृशि योग्य भूमि में वृद्धि दर्ज हुई है। क्षेत्र में भूमि सुधार सम्बन्धित नीतियों के क्रियान्वयन से ऊसर भूमि में कमी एवं कृशि के अतिरिक्त अन्य भूमि उपयोग में वृद्धि हुई है।

कृशि भूमि पर बढते जनदबाव एवं बढती खाद्य आपूर्ती की मांग जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए क्षेत्र में उपलब्ध कृशि भूमि के अतिरिक्त भूमि को सुधारकर कृशि हेतू अधिकाधि उपयोग तथा कृशि यान्त्रिकी यन्त्रों का उचित उपयोग, उन्नत''ील बीजों, रासायनिक एवं जैविक उर्वरकों का संतुलित उपयोग कर फसल संकेन्द्र मे वृद्धि के साथ व्यवसायिक कृशि को बढावा देकर फसल वैविधीकरण से प्रति हैक्टेयर उत्पादन में वृद्धि कर खाद्य आपूर्ती की आव''यकताओं की पूर्ती सम्भव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वारलोब, आर. एण्ड जॉनसन, बी. डब्ल्यू. 1954: लैण्ड प्रोबलम एण्ड पॉलिसिज, मैक्ग्रा हिल बुक कम्पनी, आई. एन. सी., न्यूयार्क, पृ. 99.
2. तिवारी, आर. सी. एवं सिंह, बी. 1994: कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ. 35.
3. तिवारी, आर.सी. एवं सिंह, बी. 2009: भारत का भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. Pant, B.R. 1988: Land Utilization in Kotadun, Kumaun Himalayan Region, Ph.D Thesis, Kumaun University Nanital, p. 195.
5. पंत, बी. आर. 1992: भूमि उपयोग तथा पर्यावरण, पहाड़ 5/6, पृ. 99–105।
6. Pant B.R. 1994: Food and Nutrition: A Study of Himalayan Region, Anmol Publication Pvt. Ltd., New Delhi, 195p.
7. Pant, B.R. and D.S.Jalal, 1992, Carrying Capacity of Land in Central Himalaya, The Geographer, 2:27-36.
8. Pant, B.R., R. C. Joshi and D. S. Jalal, 1991, Agricultural Landuse and Nutrition in Kotadun Kumaun Himalaya, Geographical Review of India, 53(4):8-18.
9. Pant, B.R., R. C. Joshi and D. S. Jalal, 1988, Land Capability Classification Model for Kotadun, Kumaun Himalaya, Geographical Review of India, 50(1):47-52.
10. Pant, B.R. and Jalal, D. S. (1988) : Nutritional Deficiency Disease in Indian Central Himalaya, The Geography Vol 38 (1), pp. 30-41.
11. जिला सांख्यिकीय पत्रिका, वर्ष – 1998 एवं 2018।